International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gage as well as in Cabell’s Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सन सैंतालीसकेसन्त्रासको स्वर देतेउपन्यास: ‘पर-कटे परिन्दे’की दास्तान

डॉ. विनोदकुमार*

रेशा-रेशा दर्द दिलों का, बस यूँ ही बयान होता है। सुनकर जिसे सच में जमीं, और आसमान रोता है।

‘तमस’ कितना भर गया है, इस ‘इन्सान’ के भीतर।खुद अपने ही कन्धों पर, वो अपनी लाश ढोता है।

देख अपने ही बन्दों को, वो खुदा-भगवान डर गया।शैतान जिन्दा हुआ उसमें, ‘और इन्सान मर गया’।

उजला चेहरा लेकिन काला, रक्त नसों में बहता था।गीता-कुरान हाथ में लेकर,‘झूठा-सच’ही कहता था।

‘धर्मपुत्र’ के हाथों सेहोती, ‘देश की हत्या’ झूठ नहीं। रूठा सावन ‘सूखा बरगद’, हरा बचा नहीं ठूँठ कहीं।

बसी दिलों में लोगों के अब, बस घातें-प्रतिघातें थीं।कहीं दीख नहीं पड़ती अब, वे ‘सीधी सच्ची बातें’ थीं।

ऐसे खिलती कलियाँ क्यूँ,जलता हुआ अलाव होगया।मरघटसापल-छिन में ही,पूरा‘आधा गाँव’ हो गया।

चलेगी वहशत ये कबतक, बनेंगे ‘कितने पाकिस्तान’।लहुलुहान अपने ही हाथों, होगा कबतक हिन्दुस्तान।

मरने औ मारने वाले सब,अरे! वे भी रब के थे बन्दे।लौट के घर को कैसे जाएँ,ये घायल ‘पर-कटे परिन्दे’।

भारतीय इतिहास की सर्वाधिक संत्रासमयी घटनाओं में से एक सन उन्नीस सौ सैंतालीस की घटना है। एक तरफ सदियों की गुलामी की बेड़ियाँ टूट रहीं थीं और दूसरी तरफ साम्प्रदायिकता की आग सदियों के सद्भाव को स्वाहा कर रही थी। अमानवीयता के ताण्डव मेंमानवीयता की नृशंस हत्या हुई।

स्वतन्त्र सत्ता और सिंहासन के स्वार्थ का मूल्य विभाजन के रूपमे चुकाना पड़ा। मात्र इतने से ही सन्तोष न हुआ; बल्कि जन-जन के हृदय में ‘सुरक्षित और स्वायत्त’ राष्ट्र की भावना को इस कदर भर दिया गया कि जमाने से जमीन से जुड़ी जनता जड़ोंसे उखड़ने को विवश हुई। जड़ों से उखड़ने की इस पीड़ा की अग्नि में कुत्सित राजनीति ने घी डालने का काम किया और इसका दुष्परिणाम यह हुआ किलाखों की संख्या में लोगबेघर हो हो गए। समृद्धि और खुशहाली, अभाव और तंगहाली में बदल गई। अनगिनत जानेंघृणित घटनाओं की भेंट हो गईं;चारों तरफ लाशें ही लाशें अम्बार गईं। इन्सान के भीतर का शैतान जाग उठा, हैवानियत का नंगा नाच हुआ और इन्सानियत

* समाज विज्ञानएवंभाषाविभाग,लवलीप्रोफ़ैशनलयूनिवर्सिटी, (पंजाब),

शर्मशार हो गई।मनुष्यता, मनुष्य के मनुष्य होने का प्रमाण है। देश-काल और परिस्थितियाँ कुछ भी हों, यदि मनुष्य भावनाओं से च्युत होता है तो यह किसी के लिए भी कल्याणकारी नहीं है। इन सभी से भिज्ञ होने पर भी मनुष्य संकीर्ण स्वार्थों के प्रेरित हो कर, बार-बार पतनोन्मुखी मार्ग पर क्यों चल पड़ता है? क्यों वह इतिहास से शिक्षा नहीं लेता। वह अनाचार और अत्याचार से तौबा क्यों नहीं कर पाता।

संवेदना समाज का सौन्दर्य है और साहित्य समाज का दर्पण है। इस दृष्टि से साहित्य में समय के समाज का सत्य प्रतिबिम्ब नित्य है। साहित्य ने विभाजन केइस अभिशाप को अपने-अपने ढंग से चित्रित किया गया किया है, लेकिन जाने क्यों हिन्दी साहित्य में इस दिशा में बहुत अधिक कुछ प्राप्त नहीं होता? तथापि कुछ रचनाएँ अवश्य प्रत्यक्ष होती हैं, जिनमेंसन सैंतालीसकेसन्त्रासमें पगी संवेदना को स्वर देने का प्रयास किया गया है।

हिन्दीके प्रतिष्ठित उपन्यासकार यशपाल ने सन सैंतालीसके सन्त्रास को अपने उपन्यास 'झूठा सच'के माध्यम से अत्यन्त मार्मिकता के साथ चित्रित किया है।राजनीतिकसामाजिक सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित इस उपन्यास को हिन्दी कथा साहित्यमें सम्मानप्राप्त है। परिवेशगत सत्य और मूल्यों का नित्य संक्रमण की झांकी इस उपन्यास की विशेषता है, जो हिन्दी साहित्य में सामान्यत रूप से देखने को नहीं मिलती।

यशपाल जी ने देश के विभाजन के समय और उसके पूर्व तथा उसके पश्चात की स्थिति को अत्यंत मार्मिक ताकि साथ प्रस्तुत किया है।इस रचना में दिखाया गया है कि सांप्रदायिकता भड़कने की घटनाएँ आकस्मिक नहीं हुईं, बल्कि उनके बीज लोगों के हृदयोंमें काफ़ी समय से अंकुरित हो रहे थे। राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिएस्वतन्त्रता के लिए एकजुट होकर केलड़ने वालों को आपस में लड़ा दिया।लेखक का यह विचार है के विभाजन के समय सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष संप्रदाय की चेतना था।लोगों के दिमाग में बैठी हुई जड़ता और विवेकहीनता ने साम्प्रदायिकता को भड़काने में बहुत बड़ा योगदान दिया है।'झूठा सच' इस सत्य का साक्षी बनकर सामने आता है कि विभाजन के समयसामुहिक हत्या,हवसपूर्ति और आगजनी की बर्बरता से पूरा भारत सहम गया था। लाखों निरपराध लोगों कोबड़ी मेहनत से बरसों लगाकर बनाई जमीन-जायदाद छोड़ने के लिए विवश होना पड़ा।प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से लेखक ने सांप्रदायिकसमस्या, राजनीतिक एवं व्यक्तिगत स्वार्थ, भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद का तटस्थमूल्याँकन किया है।नि:संकोच कहा जा सकता है कि 'झूठा सच' स्वतन्त्रता के समय, विभाजन के दंश को झेलते जन की पीड़ा-यातना को सत्यापित करने का सफल प्रयास है।

दूसरा महत्त्वपूर्ण उपन्यास जो भारत पाक विभाजनकी मानवीय त्रासदी को आधार बनाकर लिखा गया है; वह भीष्म साहनी का 'तमस' है, जिसने प्रकाशित होने के बाद पाठक एवं चिन्तक वर्ग में काफी ख्याति अर्जित की है।अत्यन्त कारुणिक इस त्रासदी को उपन्यासकार ने जिस शैली मेंप्रस्तुत किया है, वह अन्तरतम् को भिगो देता है। उपन्यास में घटित घटनाओं को पढ़-सुनकर विभाजन के विकट दौर में सांप्रदायिक आग की लपटों में किस प्रकार सदियों सेअर्जित हमारी संस्कृति और सम्पत्ति जलकर स्वाहाहो गई इसका सजीवचित्र हमारे सामने प्रस्तुत किया है।उपन्यास का प्रारम्भ सांप्रदायिक दंगे कराने के षड्यन्त्र से होता है, जिसकिपरिणति निरपराध जनसंहार के रूप होती है।जन-जन के मन मेंनफ़रत की आग को भड़काने में राजनीतिक दलों की कितनी बड़ी भूमिका रही थी, इतिहास केइस सत्य को इस उपन्यास के माध्यम से दिखाने का कार्य किया गया है।

भीष्म साहनी केइस उपन्यास ' तमस'इस तथ्य की पुष्टि करता है कि भारतीयसामाजिक की संरचना में नियतिवाद की जड़ें काफी गहरी और पुरानी है। यह नियतिवादी विचारधारा पीढ़ियों से इस देश की चेतना में धुन्ध बनकर छाई हुई है और मानव में आस्था, विश्वास और अमन को अपदस्त करने वाले तत्व निरन्तर सक्रियरहेहैं।यही कारण रहा कि सांप्रदायिक सद्भावना का जो संकल्पस्वतन्त्रता के युद्ध के प्रारम्भ में था,अपने अन्तिम पड़ाव तक आते-आते वह अविश्वास, द्वेष और घृणा में बदल गया।इसप्रकार भीष्म साहनी के इस उपन्यास में उनकी भारतीय जनता के संघर्षों के मध्य विकसितहोती ऐतिहासिक तथा वैज्ञानिक दृष्टि भी चित्रित हुई है। भीष्म साहनी जनसामान्य के यथार्थ चित्र को पकड़ते ही नहीं, अपितु सफलतापूर्वक अंकित भीकर पाते हैं।

भारत पाक विभाजन की त्रासदी को आधार बनाकर लेखन की परंपरामें लेखक अमृतराय का उपन्यास 'बीज'भी आता है, जो स्वतन्त्रता के समय वैमनस्य की ज्वाला में झुलस रही इन्सानियत को प्रस्तुत करता है।ऐतिहासिक दिन था,पन्द्रह अगस्त उन्नीस सौ सैंतालीस, जिसका सभी को शिद्धत से इन्तजार था, लेकिनएक ओरदिवाली सज रही थी अरमानों की,दूसरी ओर होली जल रही थी इन्सानों।औरत-मर्द, बूढ़े-जवानऔर बच्चे सब भून रहे थे। इसकेपश्चात विष्णु प्रभाकर जी का उपन्यास 'निशिकांत' भी आया, जिसमेंहिन्दु-मुस्लिम सांप्रदायिक समस्या को आर्थिक और राष्ट्रीय दृष्टिकोण सेदेखा गया है।'निशिकांत' उपन्यास का यथार्थवाद एक ओर तो सामाजिक जीवन कीवास्तविकताओं को प्रभावशाली रूप से चित्रित करता है तो दूसरी ओरमानवीय चेतना-संस्कारको आकार देता है।

सन सैंतालीस के समाज को चित्रित करती एक कथाभैरव प्रसाद गुप्तकृत ‘सती मैया का चौरा’भी है, जिसमें कथानक सामाजिक धरातल से उठता हुआ राजनीति के धरातल पर प्रतिष्ठित होता है। लेखकसांप्रदायिक दंगों के चित्रों को प्रस्तुत करता है और उसके कारणों की ओर स्पष्ट संकेत भी करता है कि देश के सबसे बड़े नेता राष्ट्रपिता तथा सत्य और अहिंसा के अवतारगांधी जी अचानक अपने शिष्यों के समक्ष ही इतने निशक्त विवश और निष्क्रियहो जाएंगे यह कौन जानता था।

भगवती चरण वर्मा के द्वारा लिखा हुआउपन्यास भूले ‘ बिसरे चित्र’ हिंदी का प्रथम उपन्यास माना जाता हैजिसमें भारतीय समाज के सामाजिक राजनीतिक और सांस्कृतिकजीवन का को दृष्टि में रखते हुए रचागया है।यद्यपि यह उपन्यास सैंतालीसकी घटनाओं के बारे में नहीं है,लेकिन उसकी पृष्ठभूमि को जरूर बयान करता है।विभिन्न पात्रों और घटनाओं के माध्यम से दोनों सम्प्रदायों की भावनाओं का यथार्थचित्रण प्रस्तुत किया।भगवती चरण वर्मा ऐतिहासिक उपन्यासकार के रूप में काफी चर्चित रहे हैं। उनकी रचनाओंमें सर्वोच्च ऐतिहासिक चेतना का आभास होता है। उनके पात्रभारतीय इतिहास पर विहंगम दृष्टि डालते प्रतीत होते हैं। इस दृष्टि से भी यह उनकी यह रचनामहत्त्वपूर्ण प्रमाणित होती है।

कमलेश्वर का उपन्यास ‘लौटे हुए मुसाफ़िर’विभाजन की पृष्ठभूमि पर रचित उपन्यासों से थोड़ा अलग है।लेखक का मन्तव्त विभाजन के मूल में कार्यरत मानवीय? क्रियाओं औरप्रतिक्रियाओं को स्पष्ट करना है। इसी कारण से इस समस्या को एक छोटे सेकस्बे के सन्दर्भ दिखाने का प्रयास किया है।लेखक इस उपन्यास के माध्यम से यह ढूंढने की कौशिश में है कि किस प्रकार विभाजन के साथ सांप्रदायिक और अमानवीयशक्तियाँ उभर कर आ गईं। विभाजन के पूर्व जोबस्ती बड़ी खूबसूरत थी, उसका बुरा हाल क्यों हो गया?जिस बस्ती में सांप्रदायिकता ढूँढने पर भी नहीं मिलती थी, लोग एकदूसरे के त्यौहारों में आनन्द से भाग लेते थे, अपने अपने विश्वासों कोलेकर लोग शान्ति और सद्भाव से जी रहे थे। राजनीतिक कूटचालोंसे बेखबर सभी मिलजुल कर रह रहे थे, तो कब और क्यों उनके दिलों में दरार आ गई? क्यों वे एक-दूसरे के खून के प्यासे हो गये?इस उपन्यास केआरम्भ में ही कमलेश्वर ने बस्ती की मानसिकता का सजीव अंकन किया है। पंजाबऔर सीमावर्ती प्रदेशों में तो नफरत के लिए अनेक कारण थे। वहाँ की राजनीति वअर्थनीति तथा स्थानीय नेता इत्यादि तो इस बस्ती में नफरत की चिंगारी कहाँ से आगई।इस रचना के माध्यम से इनप्रश्नों का उत्तर मिल जाता है।मनुष्य और मनुष्य के बीच में जो मानवीय सम्बन्ध है,उन्हें केंद्र में रखकर इस समस्या को देखा गया है। ऐसा करते समय लेखक बाहरीविचारों से प्रतिबद्ध नहीं है। इसी कारण वह इतनी गहराई और तटस्थ ढंग सेसम्पूर्ण परिवर्तन को देखा और अंकित कर सका है। इस

विभाजन की ओट में साधारणलोगों का शोषण किसप्रकार हुआ, इसका संकेत भी किया गया है। सांप्रदायिकशक्तियों के कारण आम आदमी के भीतर नफरत की भावना कैसे जाग उठी, उसका विश्लेषण भी किया गया है।और साथ ही साथ मानवीयता के जिवित बचे रहने का भी प्रमाण इस रचना के माध्यम से देने का प्रयास किया है।

'कितने पाकिस्तान'उपन्यास के माध्यम से कमलेश्वर नेएक प्रश्न खड़ा किया है कि सदियों से चलीआ रही विभाजन की परम्परा कब बन्द होगी? ताकि मनुष्य एक मनुष्य की तरह जीवित रह सके।धर्म के नाम पर, भगवान के नाम पर, जाति के नाम पर, विचारधारा के नाम पर, भाषा के नाम पर और वर्ण के नाम पर विभाजन अब बन्द होना चाहिये। "कमलेश्वर नेअपनी बात को पुख्ता तरीके से रखने के लिये सम-सामायिक घटनाओं का उल्लेखकिया है- जैसे कोसोवो, पूर्वी तिमोर, सोमालिया, कश्मीर आदि जगहों पर हो रहेआंदोलन और प्रतिहिंसा। इसके मूल में जाने की लेखक ने कोशिश की है तो पायाहै कि कहीं न कहीं किसी अन्य ताकत ने पहचान के ये संकट खड़े किये हैं और फिरउसके बाद जब जनता विभाजित हो गयी तो उसका लाभ उठाया, वरना कोई कारण नहींहै कि दो अलग पहचान के लोग साथ नहीं रह सकते।"

रामानन्द सागर के द्वारा लिखा गया उपन्यास 'औरइंसान मर गया' विभाजन की विभीषिका पर लिखा गया सर्वाधिक लोकप्रिय और सशक्तउपन्यास है।अन्य उपन्यासों की तुलना में यह उपन्यास अधिक जीवन्त बन पड़ा है; क्योंकिस्वयं लेखक विभाजन का भुक्तभोगी है।लेखक ने अपनी और अपने आसपास घटित होने वाली घटनाओंको ऐतिहासिक दस्तावेज की भान्ति प्रस्तुत किया है जो इस उपन्यास की सबसे बड़ीविशेषता है। अधिकांश लेखकों की सामग्री प्रत्यक्ष प्रामाणिक नहीं है जबकि रामानन्द सागर कृत 'और इन्सान मर गया' इसका अपवाद है।उपन्यास की उपलब्धता परदृष्टि डालते हुए हैं अश्क जी का कहना है कि …सांप्रदायिकता मेंबहते हुए मानवों की मन स्थिति उसके भय और व्यवस्था का सजीव औरमर्मस्पर्शी वर्णन किया है जो कई स्थानों पर क्लासिक हो गया है और यह कोईछोटी सफलता नहीं है। शिवमंगल सिंह सुमनइंसानियत की क्रूरता वरशिपर्स और मानवता का जीता जागता दस्तावेज मानते हैं।

विभाजन के ठीक छः वर्ष बाद श्रीगुरुदत्त के द्वारा लिखित उपन्यास 'देश की हत्या' हमारे सामने आता है।प्रस्तुत उपन्यास में मुख्यतः विभाजन से सम्बन्धित समस्याओं की विस्तृत चर्चा की गई है- कलपंजाब में इन्कलाब हो जाएगा, हकीकत में इस्लामी हुकूमत कायम हो जाएगी। इसकेबाद यहाँ से हिन्दुओं का निकास शुरू हो जाएगा।

हिन्दु और सिख अपने आपमानेंगे नहीं, उनको मनाने के लिए फ़ौज और पुलिस की कार्रवाई की जाएगी। इस कार्यवाई में मुसलमानजनता शरीक होगी। गुरु दत्त जी के वक्तव्यअनुसार यह प्रमाणित है कि विभाजन के समय में वे पंजाब में नहीं थे। इस उपन्यास के पात्र तथा तत्कालीन लाहौर आदि का विवेचन उन्होंने निर्वासित भाइयों के वक्तव्यों,तत्कालीन समाचार पत्रों तथा सर्व श्री गोपालदास खोसला को 'स्टर्न रेकनिंग',अमरनाथ वाली की 'नाव इट कैन बी टोल्ड' आदि के आधार पर किया है।

आचार्यचतुरसेन के द्वारा लिखा गया उपन्यास 'धर्मपुत्र' सांप्रदायिक समस्या को आधारबनाकर लिखा गया है तथा द्वितीय महायुद्ध से स्वतन्त्रता प्राप्ति तक कीकालावधि की राजनीति का संक्षिप्त विवरण भी इसके माध्यम से किया गया है।देश के विभाजन के प्रश्न से सांप्रदायिकता फैल जाती है। उपन्यास में इस बात की पुष्टि की गई है कि धार्मिक सिद्धान्तों की आड़ में पनपने वालेसांप्रदायिकता और दुष्कर्म मनुष्य का धर्म नहीं अपितु मनुष्य का स्वयं का विकार है।

राही मासूम रजा का उपन्यास 'आधा गाँव'भी सैंतालीस की घटनाओं से सम्बद्ध उपन्यास है। उत्तर प्रदेश केगाजीपुर का एक देहात इस उपन्यास की कथावस्तु का केन्द्र है। संपूर्ण उपन्यास गंगोली के आधे भाग से (मुस्लिम बस्ती दक्षिण पट्टी और उत्तर पट्टी) से सम्बन्धित होने के कारण यहआधे गाँव की कथा है।

उपन्यास की प्रारम्भिक घटनाएँ इस सत्य का प्रमाण देती हैं कि हिन्दु और मुस्लिम लोगों मे प्रगाढ़ प्रेम का सम्बन्ध था। वे एक दूसरे के सम्मान के लिए अपनी जान को भी न्यौछावर करने को तत्पर रहते थे, लेकिन यह सद्भावना नफरत की आग मेंझुलस का दम तोड़ देती है। कोलकाता में 'डायरेक्ट एक्शन' कीप्रतिक्रिया भारत के बड़े शहरों में हो रही थी, ऐसे समय यह बात गंगोली केसामान्य हिन्दुओं की समझ में नहीं आती कि अगर गुनाह कोलकाता के मुसलमानों नेकिया है तो अपने यहाँ के मुसलमानों को सजा क्यों दी जाए। जिन मुसलमान बच्चों ने छुटपनसे उनकी गोद मेंपेशाब किया है, उनके साथ जिना (संभोग) क्यों और कैसे की जाए? उनकी समझ में यहभी नहीं आ रहा था कि जिन मुसलमानों के साथ में सदियों से रहते चले आ रहेहैं, उनके मकानों में आग क्यों और कैसे लगा दी जाए?और कुछ ऐसे ही प्रश्न मुसलमानों के लिए भी हैं।

"एक मर्तबा पाकिस्तान बन गया तो मुसलमान ऐश करेंगे ऐश" की बात कहने के बाद देहाती मुसलमान पाकिस्तान को मानो स्वर्ग ही मानने लगे।कथाकार यह प्रश्न करना चाहता है कि पाकिस्तान के लिए हिन्दुस्तान के

खिलाफ होने की क्या जरूरत है? इसेभोले भाले लोग समझ नहीं पाते।लेकिनदेखते ही देखते हवा बदलती है और सद्भावना की फसल को तबाह कर देती है।गाँव, कस्बे और शहर सभी को इस आग ने बुरी तरह झुलसा कर रख दिया। दिल्ली, लाहौर, अमृतसर, कोलकाता, ढाका, चटगांव, सैयदपुर, रावलपिंडी, लाल किला, जामामस्जिद, गोल्डन टेंपल, जलियांवाला बाग ... अनारकली की लाशखेत में थी, सड़क पर थी, मस्जिद और मंदिर में थी और उसके नंगे बदन पर नाखूनोंऔर दांतों के निशान थे।

इस प्रकार लेखक ने उपन्यास में विभाजन की समस्या को अंचल सन्दर्भ में देखने और प्रामाणिक चित्र उतारने का प्रयास किया है।

प्रताप नारायण श्रीवास्तव केद्वारा 'बयालीस'नाम से उपन्यास भारत विभाजन की पृष्ठभूमि में लिखा गया है। भारत विभाजन की चर्चा जोरों पर थी, ऐसे विपरीत समय हिन्दु-मुस्लिम सम्बन्धो में एकता औरभाईचारे की भावना विद्यमान थी।इस रचना के माध्यम से लेखक ने उन स्वार्थी तत्वों का पर्दाफाश किया गया है, जो अपनेहितों की सुरक्षा और स्वार्थ के लिए हिन्दु-मुस्लिम विद्वेष को बढ़ावा देरहे थे। साम्प्रदायिक दुर्भावना को प्रायोजित करतेआ रहे थे। स्वार्थ में अन्धेहोकर पिता-पुत्र की हत्या करवाने में भी नहीं हिचकते। रहीम नसीबन, गुलाब, राजकुमार दिवाकर आदिजहाँ साम्प्रदायिक सौहार्द के प्रतीक हैं अनवर जैसेकुछ सद्भावना वाले चरित्र का हृदय परिवर्तन भी दिखाया गया है, वहीं भगवान सिंह जैसे लोग अन्त में मानसिक विक्षिप्तता के शिकारहोते हुए भी दिखाए गए। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि विभाजन के सन्त्रास का सजीव और कारुणिक अंकन इस उपन्यास में हुआ है।

यज्ञ दत्त शर्मा का उपन्यास के 'इंसान'तत्कालीन समयमें सक्रिय दानव-प्रवृत्तियों को प्रस्तुत करता है।इस उपन्यास के विषय में हजारीप्रसाद द्विवेदी जी कहते हैं कि इस उपन्यास का बीज पंजाब के उस भयंकर उत्पातमें रखा है जो भारतीय इतिहास का शायद सबसे काला धब्बा है।भगवती चरणवर्मा का उपन्यास 'सीधी सच्ची बातें' हिन्दु-मुस्लिम समस्या को व्यापक परिवेश में उठाता है। उपन्यास में हिंदू-मुस्लिमसमस्या के साथ साथ विभाजन कालीन घटनाक्रम और विभाजन केपश्चात परिणामों की चर्चा की गई है। भगवती चरण वर्मा का दूसरा उपन्यास 'प्रश्नऔर मरीचिका' आस्थाओं की मरीचिका में भटकने का घटनाक्रम है। चारभागों में विभक्त इस उपन्यास के प्रथम भाग में राष्ट्र विभाजन, कश्मीरसमस्या और गांधी की हत्या का घटनाक्रम चित्रित किया गया है। दूसरे भाग

मेंनेहरू प्रशासन की उपलब्धियों और सीमाओं का वर्णन है। तीसरे में चीनी आक्रमणऔर राष्ट्रीय नेताओं से मोहभंग का मूल्याँकन है और अन्तिम भाग में टूटतेजनमानस का चित्रण किया गया है।

नब्बे के दशक में भोपाल के मंज़ूर एहतेशाम का लिखा उपन्यास 'सूखा बरगद' स्वातंत्र्योत्तर भारत में विभाजन के परिणामस्वरूप आए सामुदायिकजीवन के बदलाव की कथा कहता है। इसके केन्द्र में भारतीय मुस्लिम समाज है,जिसके अंतर्विरोध और द्वन्द्व उपन्यासकार ने बेहद मार्मिक ढंग से उद्घाटितकिए हैं। एक मामूली आदमी, जो विभाजन को अपने मन में कभी स्वीकार नहीं करताऔर धार्मिक कट्टरता से दूर उसके लिए पाकिस्तान एक अजनबी देश है, लेकिन तब भीउसे साम्प्रदायिक मनोवृत्ति के लोगों से जूझना पड़ रहा है।असल में भारतीयसामुदायिक जीवन की बरगद जैसी बहुलता के सूखते जाने का मर्सिया है -सूखाबरगद।मंजूरएहतेशाम की रचना 'सूखा बरगद' समाज के अंतर्विरोध की ऐसी कथा है, जिसमेंधर्म, जाति, नस्ल और भाषा के सवाल अथवा यथार्थ को सामने लाने का काम किया गया है कि साम्प्रदायिकता का विष इतना गहरा है कि गहरी जड़ों वाला हरा भरा समाज इसकीचपेट में आकर सूखा बरगद बन जाता है।

अपनी दृष्टि को यदि थोड़ा और विस्तार दें तो पाते हैं कि उपर्युक्तउपन्यासोंकेअतिरिक्तयशपाल कृत ' दादा कामरेड' और 'झरोखे', राही मासूम रज़ा कृत कटरा बी आर्ज़ू, बदीउज्जमाँ कृत 'छाको की वापसी', अब्दुल हुसैन कृत ' उदास नस्लें', सलाम आज़ाद कृत ' टूटा मठ', सआदत हसन मंटो कृत ' जलालत', और ' हाशिए', कृष्ण बलदेव वैद्य कृत 'गुजरा हुआ जमाना', और 'विमल उफ़ जाएँ तो जाएँ कहाँ', कृष्णा सोबती कृत 'जिन्दगीनामा' भी इसी संवेदना को स्पर्श करती महत्त्वपूर्ण रचनाएँ हैं।

इसविभीषिका ने संवेदनशील साहित्यकारों को झकझोर कर रख दिया। इन दिनों कीस्मृतियां आज भी ताज़ा हैं, इसका प्रमाण हिन्दी की शीर्षस्थकथाकार कृष्णा सोबती के उपन्यास " गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिंदुस्तान"के रूप में सामने आया है, जिसमें उनके पाकिस्तान-स्थित पंजाब के गुजरात सेविस्थापित होकर पहले दिल्ली में शरणार्थी के रूप में आने और फिर भारत-स्थितगुजरात के सिरोही राज्य में वहां के राजकुमार की गवर्नेस के रूप में नौकरीकरने की कहानी है। अधिकांश उपन्यासों में लिखा रहता है कि इसके पात्र औरवर्णित घटनाएं काल्पनिक हैं, लेकिन इसमें इसके विपरीत लिखा है कि इसके सभीपात्र और घटनाएं वास्तविक और ऐतिहासिक हैं। उपन्यासकार की टिप्पणी है कि "घरों को पागलखाना बना दिया सियासत ने।"कृष्णा सोबती का

यह उपन्यास एक बार फिर से हमें बंटवारे केउस खून से सने अतीत में ले जाता है जो जितना हिन्दुस्तान का है, उतना हीपाकिस्तान का भी है।

सिमर सदोष कृत ‘पर-कटे परिन्दे’ विभाजन की पृष्ठभूमि पर लिखे गये उपन्यासों की परम्परा में एक नवीन एवं महत्त्वपूर्ण कड़ी बनकर प्रस्तुत हुआ है। सन सैंतालीस के सन्त्रास और सन्त्रासपूर्ण स्थिति में भी स्नेह के धागों में बन्धे जीवन को एक साथ स्वर देता हुआ उपन्यास है ‘पर-कटे परिन्दे’। इस उपन्यास के लेखक सिमर सदोष के माता-पिता और परिवार ने विभाजन की पीड़ा के दंश को स्वयं झेला है और लेखक की रग-रग में उसका अहसास आज भी जिन्दा है।

‘पर-कटे परिन्दे’ उपन्यास की कथा का ताना-बाना पाकिस्तान के गाँव खन्ना लुबाणा और पच्छोके की घटनाओं को लेकर बुना गया है। बकौल लेखक इस उपन्यास की घटनाएँ ऐतिहासिक हैं। कथा के नायक रणजोध सिंह के पिता शाह करतार चन्द बहुत हवेलियों, घोड़ियों से सुसज्जित बहुत बड़ी जायदाद के मालिक थे और आस-पास के गाँवों में उनकी तूती बोलती थी। शाह जी और इलमदीन की दोस्ती साम्प्रदायिक सद्भावना की मिसाल थी। इलमदीन ने अपनी सारी उम्र शाह जी की सेवा में गुजार दी और उनके अन्त समय तक उनकी परछाई और उनकी ताकत बनकर रहा। शाह जी के मरने के बाद अपने पुत्र करमदीन को शाह जी के परिवार और विशेष रूप से रणजोध सिंह की आन बान और शान की रक्षा-हित प्रतिज्ञाबद्ध कर स्वयं परलोक गमन कर गया। उसके बाद उसकी वफ़ादारी की परम्परा को करमदीन ने भी अपने जीवन की अन्तिम सांस तक निभाया। उपन्यास की कथा विपरीत परिस्थितियों में भी लोकरंग,मानवीयता, दोस्ती और सद्भावना की डोर परस्पर इन्सान को कैसे बांधे रखती है; इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है।सुरेश सेठ के शब्दों मेंइस उपन्यास में केवल भारत विभाजन से पूर्व या विभाजन की आग में जलते पंजाब काही जिक्र नहीं है..... सिमर के इस उपन्यास में यत्र-तत्र गुमशुदा ज़िन्दगी कीतलाश है, तो इसी के अंग-संग पंजाब की जीती जागती संस्कृति,उसके लोक-गीत, उसकीचांदनी रातों में गुनगुनाता हुआ भ्रमर, और बैसाखी के अवसर पर भांगड़ाडालते पैरों की धमक के साथ ढोलक की थाप सजीव हो उठती है।

उपन्यास का नायक किस प्रकार अपने परिवार को लेकर आग का जलता हुआ दरिया पार कर पाकिस्तान से भारत आता है और अपने जीवन को दोबारा संवारने का उद्यम करता है। मार-काट और वहशीपन का हिस्सा होने के बावजूद उसके अन्दर संवेदनामयी भावनाएँ जिन्दा है, जिसके चलते तीस साल बीत जाने पर भी हर साल

वह भारत-पाक सरहद के पास जाकर बैठने, जमीन पर अपनों के नाम लिखने और उनकी याद में मोमबत्ती जलाने को और देर शाम तक वहीं बैठ वापिस लौटने के क्रम को निरन्तर जारी रखता है। वहाँ पर पेड़ों पर बैठे परिन्दों को देख अनेक कल्पनाओं में डूबा अपनी ज़िन्दगी के बीते हुए लमहों को आँखों में उतारता है। बलदेव सिंह बद्दन के अनुसार विभाजनके दौरान उजड़े हुए लोगों की दास्तान के मार्मिक दृश्य को प्रस्तुत करतेहुए लेखक ने सामाजिक एवं नैतिक मापदण्डों पर पहरा देने वाले पात्रों केमाध्यम से आशावादी दृष्टिकोण का पक्ष-पोषण किया है।

उपन्यास के माध्यम से लेखक ने जन-जन की करुणा को चित्रांकित किया है, जो सैंतालीस के सन्त्रास को बयान करती है।डॉअजय शर्मा के शब्दों मेंमिट्टी के इस रुदन को एक और उपन्यास में ढालकर लोगों तक पहुंचाने का बीड़ा अब सिमरसदोष ने उठाया है।...मुझे उम्मीद है कि सिमर सदोष का यह उपन्यास 'पर-कटे परिन्दे' एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ के रूप में जाना जाएगा।सुभाषरस्तोगी का कहना है कि मैंने इस उपन्यास को पड़ा है कि निस्संदेह ऐसा कुछ कईबार प्रतीत हुआ जैसे विभाजन के दौर की घटनाएं एक-एककर चलचित्र की भान्ति सामनेसे गुज़र रही हों। हिंसा,अमानवीयता पारिवारिक शत्रुता, अपने घर-गाँव औरज़मीन से उखड़ने की पीड़ा सभी कुछ है इस उपन्यास में।वक्त और सत्ता के हाकिमों की शह पर धरती पर जबलकीरें खिंची तो हिंसा की एक ऐसी ज्वाला दहक उठी,जिसकी तपिश में मनुष्य के हाथ जले औरतकदीर भी जली।लकीर के इधर-उधर उड़ने वाले परिन्दों के पंख भी जले।जो जले नहीं, वे काट दिए गए।....ऐसे ही कुछ पर-कटे पंछियों की दास्तान है 'पर-कटे परिंदे'।

उपन्यासके लेखक सिमर सदोष का स्वकथन है कि पर-कटे परिन्दे आजादी के बाद हुएभारत-पाक विभाजन की त्रासदी को बयान करती एक ऐसे इलाके की गाथा है, जिसकी पहचान शौर्यहै। यह कहानी एक ऐसे गांव की है जिसकी भुजाओंने हमेशा शस्त्र को थामेंरखा- कभी देश-कौम की आन-बान की रक्षा हेतु कृपाण बनाकर, और कभी पारिवारिकअणख-आबरू की सुरक्षा हेतु तलवार बनाकर। यह कहानी सामुदायिक एवं साम्प्रदायिक एकताकी एक ऐसी पहचान को लेकर चलती है जिसने इस देश को हिंदुस्तान नाम दिया।

समग्रत: कहा जा सकता है कि हिन्दी के ख्याति-प्राप्त उपन्यास 'झूठा-सच' से प्रारम्भ हुई परम्परा में जुड़े हुए, विभाजन की पृष्ठभूमि पर सृजित उपन्यास सैंतालीस के सन्त्रास को स्वर देते 'परकटे परिन्दे' की दास्तान है। भारतीय इतिहास के उन काले पन्नोंकी करुण कथा को हिन्दी के उपन्यासकारों ने अत्यन्त मार्मिकता के साथ

अभिव्यंजित किया है। इन रचनाओं के माध्यम से आदमी में जिन्दा हैवान और इन्सान में बचे भगवान को भी प्रत्यक्ष किया है।

<><><>

सन्दर्भः

- कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
- कमलेश्वर, लौटे हुए मुसाफिर, ज्ञान भारती प्रकाशन, मुम्बई
- गुरुदत्त, देश की हत्या, भारती साहित्य सदन, दिल्ली
- प्रियवंद, भारत विभाजन की अन्त:कथा, ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली
- यशपाल, झरोखे, राजपाल एंड संस, नई दिल्ली
- यशपाल, झूठा सच, राजपाल एंड संस, नई दिल्ली
- रजा, राही मासूम, आधा गांव, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- वार्ष्णेय, लक्ष्मीसागर, हिन्दी उपन्यास उपलब्धियाँ, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
- साहनी, भीष्म, तमस, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- सिंह, कुँवर पाल, हिन्दी उपन्यास: सामाजिक चेतना, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली